GAP भाषा
A MULTILINGUAL JOURNAL OF RESEARCH
(ISSN – 2582-8770)
Globally peer-reviewed and open access journal.

लोकसाहित्य के वीरांगनाओ में बिलासा केंवटीन का योगदान

श्री मिथलेश सिंह राजपूत, डॉ. स्नेहलता निर्मलकर

(पीएच. डी. - हिन्दी)
डॉ. सी. वी. रामन् वि. कोटा बिलासपुर (छ.ग.)
Email :- mithalesh.rajput@gmail.com
मो. नं. 8770397224, 8517994081

(सह. प्राध्यापक)
डॉ. सी. वी. रामन् वि. कोटा बिलासपुर (छ.ग.)
Email :- snehlata.nirmalkar111@gmail.com
मो. नं. 8517994081, 8770397224

सारांश

छत्तीसगढ़ी लोकपरम्परा आदिम युग से प्रचलित-प्रवाहित लोकमानस के अनुभव का वह खजाना है जो वह भावी पीढी को हस्तांतरित करता है। नयी पीढ़ी युगानुरूप संशोधित-परिवर्धित संस्कृति के रूप में ग्रषित है जो लोक के रहन -सहन आवास-निवास आचार-विचार रीति-रिवाज, वस्त्राभूण,पर्व, उत्सव, त्यौहार, व्रत लोकविश्वास, धर्म, कला, लोक साहित्य आदि में विस्तीर्ण है।

छत्तीसगढ़ी लोककथाओं और लोकगाथाओं में जहाँ संस्कृति के साथ लोकविज्ञान घुलमिल कर गयी पीढ़ी को जीवन-दर्शन से साक्षात्कार कराते है, वही दृश्यकाव्य होने और लोकमंच से जुड़ने के कारण छत्तीसगढ़ी लोकनाट्य पात्रों के माध्यम से जीने का तरीका सिखाते है और उनमें सत्य-असत्य धर्म-अधर्म, न्याय-अन्याय, नीति अनीति, हिंसा-अंहिसा के धमको समझाकर मानवता की सीख प्रदान करते है।

मुख्य शब्दः *लोकगाथा, लोकसाहित्य, लोकजीवन, लोकपरम्परा*

1 प्रस्तावना:-

किसी भी सम्पन्न साहित्य का मूल उसका लोकसाहित्य होता है। सभ्यता और संस्कृति के विकास क्रम से आग्रह सामान्य से विशेष की ओर है। हम जिन परिस्थितियों में जन्में पले-बढ़े होते हैं, उनका हमारे व्यावहारिक जीवन में प्रभाव पड़ना आवष्यक है। समय के परिवर्तन के साथ-साथ परिवेश, बुद्धि, रहन-सहन, रीति-रिवाज एवं विचारों में भी परिवर्तन अपरिहार्य है। ''किसी भी लोक संस्कृति के मूल में लोक या व्यक्ति समूह का सत्य मूलभूत है। वस्तु सत्य लोक संस्कृति के उत्थान के लिए भी उत्तरदायी है। यदि एक ओर व्यक्ति की स्वतंत्र बुद्धि, उसका उद्देष्य और चेतन प्रयास है, तो दूसरी ओर परंपरागत संस्कार और आदिम मूल प्रवृत्तियाँ भी नीहित हैं। एक जहाँ विशिष्टता का कारण है, अथवा नई दिशा को खोजने वाला है, वहीं दूसरा एक सामान्य धरातल निश्चित करता है, जिस पर इस तरह की विशिष्टता पनप सके। यही अन्तर व्यक्ति समूह और लोक संस्कृति के संबंध में भी किया जा सकता है, और इसे स्पष्ट करने के लिए लोक मानस, मुनि मानस प्रत्ययों का प्रयोग विद्वानों ने किया है। मुनि मानस व्यक्ति की चेतन बुद्धि और उसकी क्रियाशीलता उद्देश्यों आदि से संबंध रखता है, किन्तु जनमानस में वे सभी प्रवृत्तियाँ और आकांक्षाएँ पलती हैं, जो मनुष्य की चेतना में मूल रूप में समायी हुई हैं।''

लोकगाथा की दृष्टि से छत्तीसगढ़ अत्यंत समृद्ध है। डॉ. सत्येन्द्र सिन्हा के अनुसार ''समस्त भोजपूरी जनपद में प्रधान रूप से नौ लोकगाथाओं का प्रचलन है।'' जबकि छत्तीसगढ़ लोकसाहित्य में तीस से अधिक लोकगाथाएॅ प्रचलित है। छत्तीसगढ़ के

https://www.gapbhasha.org/

GAP भाषा
A MULTILINGUAL JOURNAL OF RESEARCH
(ISSN – 2582-8770)
Globally peer-reviewed and open access journal.

अधिकांश लोकगीतों में किसी न किसी रूप से लोकगाथा का प्रभाव रहता है। लोकगाथाओं के नायक-नायकाओं में वीरता, एवं साहस के अतिरंजित गुण मिलते है। ''छत्तीसगढ़ जनपद के प्रायः समस्त प्रधान लोकगीतों में किसी न किसी रूप में लोकगाथा का समावेश रहता है। लोकगाथा की परंपरा वैसे हर लोक गीतों में पायी गई है जो कि उस क्षेत्र में घटित कोई ऐतिहासिक घटना से संबंधित रहती है। ये घटना राजनैतिक, ऐतिहासिक, प्रेम-प्रासंगिक, वीरतापूर्ण तथा विभिन्न परिस्थिति जन्य प्रभावों से युक्त होते हैं। इन लोकगाथाओं का निर्माण काल मध्ययुग है, अतः इनमें तात्कालीन परिस्थितियों का चित्रण मिलता है। अक्सर कथा के नायक में वीरता अधिक है। वीरतापूर्ण प्रधानगुणों में नारियां भी पुरूषों से पीछे नहीं है। प्रायः सभी लोकगाथाएँ किसी न किसी कहानी को लेकर चलती हैं, और यद्यपि मूलतः ये कहानियाँ ही है, परन्तु गेय है।''

डॉ. मेरे के अनुसार- ''बेलेड छोटे-छोटे परिच्छेदों में रचित सीधी-सादी जीवन कविता है, जिसमें कोई लोकप्रिय कथा चित्रात्मक रूप में कही गई है।'' ''लोक गाथाएँ चूंकि लम्बी होती है, अतएव कहानी एवं गीत-संगीत का समावेश होने के कारण ये काफी रोचक होती हैं एवं जनसमूह द्वारा काफी तन्मयता से सुनी जाती है। इसलिए कुछ लोकगाथा-गायक इसे स्मरण कर अपनी जीविका का साधन बना लेते है तथा गांव-गांव घुमकर लोकगाथाओं का गायन करते है। कई परिवारों में तो यह कार्य पीढ़ी दर पीढ़ी गायी जाती है। कई क्षेत्रों में तो विशिष्ट जातियों के जीविकोपार्जन का साधन मात्र बन गई है। इन लोक गाथाओं से जन सामान्य का मनोरंजन ही होता है। जैसे छत्तीसगढ़ की देवार एवं पठारी जातियाँ।

लोकगाथाओं का आकार कुछ निश्चित नहीं होता है। कई लोकगाथाएँ तो इतनी लम्बी होती है कि उन्हें आकार की दृष्टि से शिष्ट साहित्य के ''महाकाव्य'' की श्रेणी में रखा जा सकता है, जैसे आल्हा और पंडवानी। पंडवानी, आल्हा में लम्बी कहानियाँ ही वर्णित है जबकि ढोला मारू, लोरिक चंदा, वीरसिंह तथा सरवन की कथा प्रायः उतनी लम्बी नहीं। छत्तीसगढ़ में नारी प्रमुख लोकगाथाओं में अहिमन रानी, रेवा रानी, कंवला रानी, रहीमत रानी आदि की गाथा प्रमुख हैं जिसमें इनकी वीरता, सतीत्व, धर्म परायणता एवं पातिव्रत धर्म का उल्लेख है और उनकी गाथाएँ छत्तीसगढ़ में प्रमुख रूप से गायी जाती है।

डॉ. विजय कुमार सिन्हा के अनुसार छत्तीसगढ़ी लोकसाहित्य वीरांगनाओं का वर्गीकरण निम्नानुसार से किया गया है-

छत्तीसगढ़ी लोकसाहित्य की प्रमुख वीरांगनाएँ :-

अहिमन रानी
केवला रानी
रहिमत रानी
नगेसर कइना
चंदा-ग्वालिन
फूलकुंवर
रेवा रानी
दसमत ओड़नीन
कवलापति
फूलबासन
बिलासा केंवटिन

यह सभी वीरांगनाओं की नारी प्रधान लोकगाथाएँ देवार जातियों के द्वारा गायी जाती है।

छत्तीसगढ़ी लोकगाथाएँ एक ओर जहाँ सार्वदेशिक लोकगाथाओं के आंचलिक रूप को उद्घाटित करती हैं, वहीं दूसरी ओर स्थानीय रंग व तरंग के अनुरूप विशिष्ट लोकगाथाओं को भी प्रस्तुत करती है। जिन गाथाओं का क्षेत्र वृहद् विस्तृत है, वे इस अंचल में भी प्रचलित हैं जबकि इतिहासकारों के मौन रहने के बावजूद अनेक स्थानीय गाथाएँ छत्तीसगढ़ी जनमन में रची बसी है। ये गाथाएँ इस अंचल की धरोहर ही नहीं अपितु ऐतिहासिक, सांस्कृतिक दस्तावेज हैं। लोकगाथाकार कल्पना कौशल व भावसागर के सहारे त्रिलोक को ही गेय कथा की सीमा समझता है।

2 लोकसाहित्य में वीरांगनाओ में बिलासा केंवटीन का योगदान

लोकसाहित्य में वीरांगनाओ में बिलासा केंवटीन का योगदान अद्योलिखित बिन्दुओं पर प्रस्तुत है-

2.1 भक्ति-भावना

छत्तीसगढ़ की नारियों में भक्ति-भावना कूट-कूटकर पायी जाती है। वे शंकर-पार्वती की पूजा करती हैं उन्हीं को अपने

https://www.gapbhasha.org/

कुल देवी-देवता के रूप में मानती हैं। शंकर-पार्वती भी उनके ऊपर अपनी कृपा बनाये रखते हैं। जैसे-

अहिमन रानी

''जब अहिमन रानी को उनके पति राजा वीरसिंह के द्वारा घोड़े की पूंछ से बांधकर खींचा जाता है। तब अहिमन रानी मर जाती है। उसका व्यापारी भाई आता है। मृत बहन को देखकर शोक-मग्न होता है। इसी समय महादेव-पार्वती के प्रताप से अहिमन पुनर्जीवित हो जाती है। ये सभी अहिमन रानी की भक्ति का प्रताप था।''

केवला रानी

राजा मदनसिंह केवलारानी को अपने घोड़े के पूंछ से बांध देते हैं और घोड़ा कूदाते हुये आगे बढ़ते हैं। केवला रानी रोती-बिलखती है। अन्त में सोलहों सिंगार किये रानी स्वर्ग-सिधारती है। उधर से नारद मुनि पधारते हैं पार्वती भी आ पहुंचती हैं। वे नारद मुनि से केवला को पुनर्जीवित करने का आग्रह करते है और केवला रानी जी उठती है। ये सभी केवला रानी की भक्ति और विश्वास का प्रतीक है।

कंवलापति

''देवराज इन्द्र की पुत्री कंवलापति लक्ष्मण जती से अत्यधिक प्रेम करती थी। एक मालिन वृद्धा के द्वारा बताये जाने पर वह लक्ष्मण तक पहुंचती है। वह शंकर जी की पूजा-अर्चनादि से संतुष्ट कर वरदान में पति रूप में लक्ष्मण को प्राप्त कर लेती है। इस गाथा में कंवलापति द्वारा शंकरजी पर विश्वास व अपने भक्ति-भावना द्वारा लक्ष्मणजती को पति रूप में प्राप्त करना बताया गया है।''

दसमत कैना

दसमत कैना भी ईश्वर पर आस्था रखती थी, विष्वास करती थी परन्तु कर्म करना नहीं छोड़ती थी। ''कर्म करो फल की चिंता मत करो'' गीता के उपदेश का अनुसरण करते हुए वह भगवान का नाम लेकर कर्म करती थी। एक बार जब उसके पिता भोजराज उससे पूछते हैं कि तुम किसके भाग्य में खाते-पिते हों तथा किसका नाम लेती हो। तब जब उत्तर में दसमत कैना कहती है कि पिताजी ! मैं अपने भाग्य का खाती-पीती हूँ तथा ईश्वर का नाम लेती हूँ।

छत्तीसगढ़ी में भाग्य को 'करम' कहा जाता है। यहाँ पर दसमत कैना का ईश्वर के प्रति पूर्ण आस्था स्पष्ट होती है। वह आजीवन ईश्वर पर विष्वास करती है तथा उसका नाम भी लेती है। ईश्वर ही उसकी रक्षा करतें हैं। इसीलिए वह अपने कर्त्तव्य पथ पर सफल हो अपने सतीत्व की रक्षा कर पाती है।

बिलासा केंवटीन

जिस प्रकार छत्तीसगढ़ की नारियाँ अहिमन रानी, केवला रानी, कंवलापति, व दसमत कैना आदि पार्वती (दुर्गा) व शंकर जी पर पूर्ण आस्था रखती तथा पार्वती शंकर जी की ही भक्ति-भावना से पूजा करती थी। उनकी गाथा में शंकर जी पार्वती की भक्ति स्पष्ट रूप से परिलक्षित है। तथा संकट आने पर शंकर-पार्वती उनके ऊपर कृपा भी करते हैं।

इसी प्रकार बिलासा केंवटीन भी गौरा-गौरी, दुर्गा, लक्ष्मी पर आस्था रखती थी युद्ध के समय दुर्गा लक्ष्मी की नाम रटती थी। राजा कल्याण साय बिलासा केंवटीन कों महिला सेनापति बनाते है। तब राजदरबार सें बिलासा घोड़े पर सवार होकर निकलती है। बिलासा नें अपनें जागीर का विस्तार किया गाँव को विकसित कर नगर का निर्माण किया उसके बड़ते प्रभाव को देखकर पड़ोसी राज्य नें उसकी जागीर पर हमला कर दिया। बिलासा डटकर मुकाबला किया अपने राज्य की रक्षा करने के लिए हिम्मत नही हारी और माँ दुर्गा का नाम लेते हुऐं एक-एक को मार गिराई।

2.2 सतीत्व

छत्तीसगढ़ की नारियाँ पतिव्रता होती हैं। वे पति की पूजा करती है तथा अत्यधिक प्रेम भी करती है। वे पति को परमेष्वर मानती हैं। प्रत्येक नारी में सतीत्व की भावना पायी जाती है। चाहे उनके पति उन्हें मारे-पीटे या शंका करे फिर भी वह उसे ईश्वर मानती है। जैसे-

नगेसर कइना

सीताराम अपनी पत्नी नगेसर कइना पर कोड़े की वर्षा करके उनकी प्राण ले लेता है। उसी समय परमात्मा वृद्ध के वेश में आकर अमृत वर्षा कर नगेसर को जीवित करता है। एक दिन जब सीताराम नदी में गिर जाता और उसे नदी पार करना मुष्किल पड़ जाता है और बहने लगता है तब नगेसर कइना नदी में कूदकर अपने पति को बचा लेती है। यहीं पर नगेसर कइना की सतीत्व दिख जाती है कि वह अपने पति से कितना प्रेम करती है।

https://www.gapbhasha.org/

दसमत कैना

दसमत कैना भी अपनी पतिव्रता धर्म, धर्मशीलता व सतीत्व के लिये पूरे उड़िया समाज व छत्तीसगढ़ में आदर्श नारी के रूप में जानी जाती है। जब दसमत कैना के स्वजन-परिजन राजा महमदेव के हाथों मारे जाते हैं और उसके पति सुदन बिहइया भी गोली के शिकार हो जाते है तब भी दसमत सब कुछ खोकर भी अपने स्वाभिमान, मान-मर्यादा और अस्मिता की रक्षा के लिये प्राणप्रण से जुटी रहती है। अंत में जब अकेली पड़ जाती है तब अपनी इज्जत व मर्यादा की रक्षा के लिये अपने पति की चिता में खुद सती हो जाती है। इस प्रकार नारी समाज तथा छत्तीसगढ़ में अपने सतीत्व का छाप छोड़ जाती है।

बिलासा केंवटीन

जिस प्रकार नगेसर कइना व दसमत कैना अपनी पतिव्रता धर्म, धमशीलता, सतीत्व के कारण आज छत्तीसगढ़ में आदर्श नारी के रूप में विख्यात है उसी प्रकार बिलासा केंवटीन अपनी पतिव्रता धर्म, धमशीलता व सतीत्व के लिये पूरे केंवट (निषाद) समाज व छत्तीसगढ़ में आदर्श नारी के रूप में जानी जाती है। एक बार बाहरी शासक अपने लाव-लास्कर के साथ शिकार करनें इसी जंगल में आयें थे जहॉ उन्हें बिलासा के राजपाट की प्रसिद्धि और शान शौकत की जानकारी हुई। इस शासक नें अपनी विशाल सेना बुलाकर बिलासा के नगरी में आक्रमण कर दिया बंशी के नेतृत्व में बाहरी राजा के सैनिकों से घनघोर युद्ध हुआ। दुष्ट राजा के सैकड़ो सैनिको का संहार करते हुए अंततः बंशी शत्रुओं का शिकार हों गया उन्हें अपना प्राण गंवाना पड़ा। बंशी के वीरगति प्राप्ति की सूचना से बिलासा अत्यंत दुखी हुई और अपना रौद्र रूप दिखाते हुयें बड़ी संख्या में शत्रु सैनिको का नर संहार की । शत्रु सैनिको की संख्या अत्यधिक होने के कारण बिलासा भी लड़ते-लड़ते वीरगति को प्राप्त हुई। इस लोकगाथा में बिलासा एवं बंशी का प्रणय प्रसंग, बिलासा की बहादुरी एवं हिम्मत, अस्त्र-शस्त्र चलाने तथा मल्लयुद्ध में दक्ष, वाक्पटु एवं संघर्षशीलता की मिसाल है। उसकी गाथा सतित्व-रक्षा हेतु स्मरणीय है। बिलासा केंवटिन के नाम से बिलासपुर शहर अपवाद है। वहीं बिलसिया के सतित्व के नाम पर नगर बसा-बिलासपुर। आज भी केंवट जाति की देह उस शरण की कालिख में काले रंग की होती है और आज भी नगर के तट पर सावन की भोजली के बहाने अरपा की लहरें, लहराकर हहराती हैं रो उठती हैं, छर-छर गौरी सती बिलसिया की याद में। मुगल शासन काल के जहांगीर नामा में रतनपुर के राजा कल्याणसाय का उल्लेख मिलता है। राजा कल्याणसाय कलियुग के भीम गोपल्ला, बिलासो बाई और नरियरा ग्राम जिला जांजगीर चांपा के भौंरों दुबे के साथ दिल्ली में जाकर जहांगीर से मिले थे।

डॉ. पालेष्वर शर्मा के अनुसार- एक नाव में कोई लड़की बह रही थी। बंशी पष्चिम की ओर निहार रहा था अचानक 'बचाओ-बचाओ' की आवाज सुनकर कतला मछली की तरह तैरती जा पहूंची। उसकी नाव और उस लड़की की केश पकड़ कर उठाना चाहा। नाव का सहारा, मरद की बांह, फेन उगलती... वह बिलसिया डोलती नाव में आ गई। वहीं से बिलासा और बंशी में आत्मीय प्रेम हो गया जो प्रणय सुत्र में भी बंध गये। यह उनकी पहली भेंट थी।

निष्कर्ष:

छत्तीसगढ़ मे अनेक नारी के लोकगाथा प्रचलित है जिसमें बिलासा केंवटिन की नारी लोकगाथाओं में एक प्रमुख लोकगाथा है। यहाँ नारी लोकगाथाओं की प्राचीन परंपरा है। बिलासा का नाम अमर। उसके नाम पर बसे बिलासपुर मे ही आज हाईकोर्ट है। यहाँ 1933 मे महात्मा गाँधी आये वे बिलासा के नगर में पधारे जहाँ व आये अब गाँधी चौरा कहलाता है। वीर नारी का नाम अमर हो गयी। अरपा नदी के किनारे माता बिलासा की मूर्ति लगी है। इसका यश चारो ओर फैला है। इतिहास के तथ्य तर्क प्रमाण आश्रित होते है, लोकगाथाओं की तरह सहज स्वाभविक नही इसलिये इतिहास नायकों को चारण-भाट बारोट की आवश्यकता होती है, जो उनकी सत्ता और कृतिव सके प्रमाणीकरण स्व-गढ सके, पत्थर-तांबे पर उकेरे जा सके, लेकिन लोक नायकों के व्यक्तित्व की विशाल उदस्तता जनकवि को प्रेरित और बाध्य करती है, गाथाएँ गाने के लिये। इसलिए संदेश से परे नही होते, किन्तु लोक नायको का सच काल व समाज स्वीकृत होकर सदैव असंदिग्ध होता है।

इसी तरह ''बिलासा केंवटीन'' काव्य, संदिग्ध इतिहास नही बल्कि जनकवि-गायक देवारों की अंसदिग्ध गाथा है, जिसमें ''सोने के माची, रूप के पर्रा'' और ''धुर्रा के मुर्रा बनाके, थूक में लाडू बांधै'' कहा जाता है। केवटिन की गाथा देवार गीतों के काव्य मूल्य का प्रतिनिधित्व कर सकने मे सक्षम है ही केंवटीन की वाक्पटुता और बुद्धि-कौशल का प्रमाण भी है।

https://www.gapbhasha.org/

सन्दर्भ ग्रन्थ

[1] निषाद डॉ. दशरथ लाल ''बहादुर सती बिलासा देवी'' संगम साहित्य एवं सांस्कृतिक समिति मगरलोड धमतरी (छ.ग.)
[2] बिंद बलराम ''निशाद संस्कृति''
[3] पाठक डॉ. विनय कुमार (1970) ''छत्तीसगढ़ी लोकगाथा'' प्रयास प्रकाशन बिलासपुर।
[4] निर्मलकर डॉ. बलदाऊ प्रसाद ''छत्तीसगढ़ समीक्षा साहित्य को डॉ. विनय कुमार पाठक का प्रदेय'' -प्रयास प्रकाशन बिलासपुर।
[5] शुक्ल दयाशंकर (1969) छत्तीसगढ़ लोक साहित्य का अध्ययन ज्योति प्रकाशन रायपुर।
[6] निर्मलकर डॉ. स्नेहलता (2014) छत्तीसगढ़ी लोकगाथा की परम्परा और दसमत कैना एक विवेचना डॉ. सी. वी. रामन् विश्वविद्यालय करगी, रोड कोटा बिलासपुर।
[7] वर्मा रामकुमार 'नारी प्रधान देवार लोकगाथा केवलारानी'' प्रकाशक बिहनिया संस्कृति विभाग रायपुर (छ.ग.)

https://www.gapbhasha.org/